न्यायोपार्जित धन से ही शान्ती मिलती है ।
परमात्मा की प्राप्ति आग्रह से नहीं, अनुग्रह से होती है ।
स्वयं किसी का मित्र बन जाना ही मित्र पाने का एक मार्ग है ।
परिवर्तन संसार का नियम है - सामंजस्य आपका सामर्थ्य है ।
शत्रुता मार दो, शत्रु मर जायेगा ।
ट्रस्टी - समूह के एक व्यक्ति में या कुछ व्यक्तियों में दिखाया गया विश्वास ।
साथ में आना शुरुआत है, साथ रहना प्रगति है और साथ काम करना सफलता है ।
क्रोध मूर्खता से प्रारंभ होता है और पश्चाताप पर समाप्त होता है ।
वर्तमान में जीना सीखो भविष्य की चिंता न करो ।
अपने विचार रखो मगर शालीनता से ।
दीन दु:खियों की चिकित्सा के लिये अनुदान किसी भी धार्मिक अनुष्ठान से बढकर है ।
एक एक व्यक्ति खुद सुधर जाए तो समाज सुधर जाएगा ।
अपनी बात कहने के लिए, दूसरों की बात सुनने की क्षमता होना आवश्यक है ।
विचार है पुष्प एकत्रित करना, चिंतन है माला पिरोना ।
सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नही ।
धर्म रहित विज्ञान लंगडा है और विज्ञान रहित धर्म अंधा ।
माता-पिता की सेवा ही सब धर्मोका सार है ।
जिस घर में नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते है ।
जिसका स्वभाव सुधर जाएगा, उसके लिए दुनिया सुधर जाएगी ।
माँ और आसमां - दोनों अनन्त है ।
कर्मों का नहीं, कामना का त्याग कीजीये ।
अनुशासन स्वयं से शुरु होता है ।
बूंद अपना अस्तित्व खोकर ही महासागर बन पाती है ।
जगत के मूर्ख व्यक्ति : १) निंदा करने वाला २) निंदा सुनने वाला ।
माता-पिता की सेवा करोगे तो संतान से सच्चा सुख पाओगे ।
हम कितना जियें यह महत्वपूर्ण नहीं, बल्कि हम कैसे जियें यह महत्वपूर्ण है ।
स्वयं के विकास एवं विनाश का जिम्मेदार स्वयं ही होता है ।
युवा किसी भी राष्ट्र, समाज और परिवार की रीढ होती है ।
अधिकार की बात करने से पूर्व कर्तव्य को समझना चाहिए ।
अहम और बहम इन दोनों से बचके रहो ।
पुरुषार्थ ही प्रारब्ध से बडा है ।

सफल दाम्पत्य जीवन - सहकार, समझ और विश्वास पर आधारित हैं ।
आपने क्रोध पर संकूश लगा दिया तो समझो आप जीत गये ।
केवल भाग्य के भरोसे बैठने वाले को भाग्य कभी साथ नहीं देता ।
असफलता अर्थात् और प्रयास करने का मौका ।
समाज के सेवक बनो मालिक नही ।
रुप बदला जा सकता है, पर स्वरुप नहीं ।
जीवन एक कर्तव्य है - निभाओ, पालन करो ।
दया वह भाषा है जिसे बहरे सुन सकते हैं और गूंगे समझ सकते हैं ।
भूल को स्वीकार करना ही सच्चा प्रायश्चित है ।
धर्म के लिए मन चाहिये, धन नहीं ।
सेवा को व्यवसाय नहीं, व्यवसाय को सेवा बनाओ ।
समाज सेवा और ईश्वर सेवा एक रुप के दो नाम है ।
सत्य की नाव हिल सकती है, लेकिन डूबेगी नही ।
संस्कारिक मानव शिव है, असंस्कारिक शव ।
सच पर विश्वास रखो, सच ही सोचो, सच ही कहो ।
विभूतिमान अपनी विभूति के कारण अमर होते है ।
जो बूरी खबर से घबराता नहीं है, वह अच्छी खबर से फूलेगा नहीं ।
अगर मैं सच्ची सेवा न करूँ तो जीने में मुझे कुछ रस नहीं है ।
अकेलापन में जो लाभ हैं वह अनुभव से ही सिद्ध हो सकता है ।
अहंकार रुपी अंधकार, अंधकार से भी ज्यादा है ।
भूतकाल हमारा है, हम भूतकाल के नहीं हैं ।
अगर हमारे पडोसी स्वच्छ नहीं है, तो हमारी निजी स्वच्छता पंगु है ।
आलस्य से हमें दुख होगा तो हम आलसी नहीं रहेंगे ।
डरो नहीं, क्योंकि परमात्मा तुम्हारे पास ही है ।
किसी की मेहरबानी मांगना अपनी आजादी बेचना है ।
जिसने अपनापन खोया, उसने सब खोया ।
शुद्ध हृदय से निकला हुआ वचन कभी निष्फल नहीं होता ।
जमीन का मालिक तो वही है जो उस पर मेहनत करता है ।
प्रतिक्षण अनुभव लेता हूं कि मौन सर्वोत्तम भाषण है ।
नियम का छूट जाना कैसा खतरनाक हैं ।
अभिमान मनुष्य को खा जाता है ।

ईर्ष्या करने वाली को खाती है ।
अंधा वह नहीं जिसकी आंख फूट गई है । अंधा वह है जो अपने दोष ढंकता है ।
ईश्वर हमको कभी नहीं भूलता, हम भूलते हैं वही सच्चा दुःख ।
सत्य के दर्शन, बगैर अहिंसा के हो ही नहीं सकते ।
जब हम जानते हैं कि एक वस्तु की दो बाजू हैं, तो हम सफेद को देखें ।
अमृत भी, उसमें जहर पडने से जहर बन जाता है ।
विद्या वही है जिससे मनुष्य अपने आप को पहचाने ।
प्रार्थना के लिए हृदय आवश्यक है, वाचा नहीं ।
रामनाम रुपी अमृत आत्मा को आनन्द देता है, शरीर की व्याधि दूर करता है ।
मनुष्य के भीतर ही गंगा पडी है । उसमें स्नान नहीं कर पाता और कोरा रहता है ।
वही जिंदा है जिसके हृदय में राम रहता है, ऐसा जानता है ।
मन का मैल शरीर के मैल से भयंकर है ।
बलिदान वही कर सकता है जो शुद्ध है, निर्भय है, योग्य है ।
मौत की धमकी से क्या डरना, क्योंकि वह तो सदा की है ही ।
ईश्वर को पहचानना है तो स्वार्थ और भय को छोडना ही है ।
बगैर सत्संग के आत्मा सूख जाती है ।
क्रोधावेश में मनुष्य अपना नुकसान करता है ।
समुद्र में कितना भी तूफान होता है, तो भी समुद्र अपनी शांति नहीं छोडता है ।
हम बडी बातों को न सोचें, अच्छी सोचें ।
जब तक प्रेरणा को बुद्धि का समर्थन नहीं होता, तब तक वह पंगु है ।
आदमी अपने भीतरी आवाज को कभी न दबाये, भले ही वह अकेला हो ।
जो बहुत गिनती करता है, वह आत्मा-दर्शन नहीं कर सकता है ।
त्रिविध ताप मिटाने दवा मात्र रामबाण (रामनाम) है ।
जब हम कुछ भी देते हैं, तो हमारे में जो सच्चा है वही दें ।
अगर आदर्श को कभी न छोडा जाए, तो आदर्श हमें कभी नहीं छोडेगा ।
अशांति और अधीरज दो व्याधि हैं और दोनों आयु हरण करते है ।
ज्ञानी पुरुष त्याग से ही शांति पाता है ।
जो मनुष्य दूसरों की ऐब निकालता है, वह अपनी नहीं देख सकता ।
श्रद्धा ही जिंदगी का सूरज है ।
जो अपने को नहीं पहचानता है, वह नष्ट होता है ।
हरेक आदमी को अपना मूल ढूंढना चाहिए ।

विचारशून्य जीवन पशु जीवन जैसा है ।
सादगी में भलाई है, महत्त्व है, दौलत में नहीं ।
धैर्य से बहुत काम बनते हैं, अधैर्य से बिगडते हैं ।
कुछ भी संकट हो, प्रेमाग्नि से दूर होता है ।
मनुष्य की सच्ची पहचान उनके हार्दिक विनय से होती है ।
खामोशी, खामोशी नहीं है जो डर के मारे होती है ।
पवित्रता की परीक्षा तब होती है जब अपवित्रता से घर्षण होता हैं ।
त्याग ही सच्चा भोग है ।
बगैर भीतर की शांति के बाहरी शांति कुछ काम की नहीं है ।
जो मनुष्य कभी निराश नहीं होता है, वह सरदारी कर सकता है ।
राजा या रंक हरेक अपने धर्म का चौकीदार होता है ।
बगैर निःस्वार्थता के निर्भयता कैसी ?
भोग को मनुष्य नहीं भुगतता है लेकिन लोभ मनुष्य को भुगतता है अर्थात् खा जाता है ।
सत्य के साथ दृढता होनी ही चाहिए ।
अनासक्ति के साथ अनियमितता का मेल की नहीं जमता है ।
अगर आत्मा है तो परमात्मा है ही ।
जो देते हो वह तुम्हारा है, जो रखे हो वह तुम्हारा नहीं है ।
आदमी जीतना भोग भोगता है, उतना ही दुःखी होता है ।
झूठ आत्मा को खा जाता है, सत्य आत्मा को पुष्ट करता है ।
जो ईश्वर को भूलता है, वह अपने को भूलता है ।
अहंभाव मिटने से ही डर मिटती है ।
अगर हरेक हृदय में ईश्वर है, तो हम किसका तिरस्कार करें ?
जीना झूठ है । मृत्यु सही है, निश्चित है ।
श्रद्धा की परीक्षा सबसे कठिन अवसर पर होती है ।
स्वच्छता जब भीतरी और बाहरी रहती है तब वह ईश्वरमयता को पहुँचती है ।
खूबी अकेल जूझने में है, विरोधी एक हो या अनेक ।
पवित्रता परदे में नहीं रहती । उसे रक्षा ईश्वर की ही चाहिए ।
जो मजदूरी नहीं करता लेकिन खाता है, वह चोरी का अन्न खाता है ।
जीने के मजे जीने की जंजाल छोडने में है ।
सच्चे भक्त के लिए कुछ भी अशक्य नहीं है ।
भक्त भगवान में लीन होता है ।

श्रद्धा बुद्धि से परे है, उसकी विरोधी नहीं है ।
विद्या रहित मनुष्य पशु समान है । वह विद्या कौन सी ?
श्रद्धा में निराशा को कोई स्थान नहीं है ।
जो किसी की गुलामी करना नहीं चाहता है, उसे ईश्वर की गुलामी करनी है ।
धर्म पालन में से जो अधिकार निकलता है वही स्थिर रहता है ।
रोगग्रस्त शरीर सह्य बन सकता है, रोगग्रस्त मन नहीं ।
हिंसा दुर्बल का शस्त्र है, अहिंसा सबल का ।
मौत से जितने लोग मरते हैं, उससे फिकर से अधिक मरते हैं ।
स्वार्थ हमेशा हमें चिंताग्रस्त करता है ।
शुभ विचार करना एक बात है, अमल करना अलग बात ।
जब मनुष्य अपने को पहचानता है, तब मुक्त है ।
अगर भीतरी बत्ती जले तो सारे जगत को प्रकाश देती है ।
ईश्वरमय जीवन कभी मुश्किल नहीं है ।
व्याधि के डर से जितने आदमी मरते हैं, उससे कम व्याधि से मरते हैं ।
जिसके साथ ईश्वर है, उसके साथ सब है ।
आदमी अपने दुःख हंसकर भूल जाता है । रो कर बढाता है ।
जिसके पास सब कुछ है, लेकिन ईश्वर नहीं, उसके पास कुछ नहीं है ।
धैर्य के फल मीठे होते हैं ।
पुत्र - पिता-माता को नमस्कार करता है, सो प्रार्थना है ।
हमारी श्रद्धा अखंड बत्ती के जैसी होनी चाहिए ।
समता के फल मीठे होते हैं ।
शुद्ध विचार की शक्ति वचन से बहुत अधिक है ।
जब सब कुछ ईश्वर का है, तब उसको क्या अर्पण करें ?
जैसे हम आदर्श के नजदीक पहुँचते हैं ऐसे हम सच्चे बनते जाते हैं ।
जो हमारे हृदय में है उसे कभी न कभी बाहर निकालना ही है ।
हम किसी से भी बेहतर नहीं है - इस विचार में सत्य भरा है, नम्रता ।
शुभ विचार करना एक बात है, अमल करना अलग बात है ।
श्रद्धा उसका नाम है जो विरुद्ध निशानी होते हुए अचलित रहती है ।
जो गुस्सा स्वजन पर होता है उसे रोकने में जप है ।
जिसके साथ सब कुछ है लेकिन ईश्वर नहीं, उसके पास कुछ नहीं ।
जब आदमी अंतर खाली करता है, तब ईश्वर वह खाली जगह भरता है ।

जो कोई ईश्वर का नाम लेंगे वे मुक्त हो जाएंगे ।
भगवान के शरण में जो सुख रहता है, इसका वर्णन कौन कर सकता है ।
श्रद्धा से मनुष्य क्या नहीं करत सकता ? सब कुछ कर सकता है ।
आदमी अपना दुःख हँसकर भूल जाता है । रो कर बढाता है ।
किस्मत पर सब न छोडे, न पुरुषार्थ का फांका करें ।
बगैर नियम के एक भी काम नहीं बनता ।
असत्यवादी अपने लिए अनेक खिडकियाँ रखता है ।
गलती (तब) मिटती है जब दुरस्त कर लेते हैं ।
उतावला सो ब्हावरा, धीरा सो गंभीरा ।
मात्रा स्पर्श आते हैं, जाते हैं । उसे सहन करो ।
अभय में सब प्रकार के डर का अभाव होना चाहिए ।
विकारी विचार भी बीमारी की निशानी है ।
जो मनुष्य अपने दुःखो को गाता है, वह उसे चौगुना करता है ।
वृक्षन की मति ले - भजन मनन करने योग्य हैं ।
तुलसी दया न छाडिये जब लग घट में प्रान ।
ईश्वर हमारा आश्रय और बल है एवं आपत्ति के समय में रक्षा करता है ।
जब तक प्रेरणा को बुद्धि का समर्थन प्राप्त नहीं होता तब तक वह पंगु है ।
आसक्ति से किया हुआ शुद्ध काम में भी दांव-पेंच आते ही हैं ।
अहिंसा की परीक्षा हिंसा का सामना करने में होती है ।
आदमी अपने भितरी आवाज को भी न दबायें, भले ही वह अकेला हो ।
सत्य ऐसी चीज है जो कहने में आदमी को बार-बार सोचकर बोलता पडता है ।
जब हम कुछ भी देते है, हमारे में जो सच्चा (है) वही दें ।
भोग को मनुष्य नहीं भुगतता है लेकिन भोग मनुष्य को भुगतता है ।
हृदय में ईश्वर का वास हो जाता है, हम न खराब विचार, न खराब काम करते है ।
मैं करता हूं ऐसा कहना ही अज्ञानता की परिसीमा है ।
अन्तरज्ञान अमूल्य वस्तु है ।
सिवाय मन की स्थिरता के दर्शन हो ही नहीं सकता है ।
हमारा धर्म पालन ही सच्ची बात है ।
उमदा ख्याल खुशबू जैसा है ।
सिवाय ईश्वर की गोद के हमें और कहीं सलामती हो ही नहीं सकती ।
आवेश शांत होने पर भी जो काम किया जाता है, वही फलदायी होता है ।

जिसे ईश्वर का सहारा है उसे पंगु मानना पाप समझा जाए ।
जो जीवन के सुर मे चलता है, उसे कभी थकान नहीं होगा ।
जिंदगी का एक भी क्षण ऐसा नहीं है जिसमें आदमी सेवा नहीं कर सकता है ।
जो मनुष्य त्याग करता है और दु:ख मानता है, उसने त्याग किया ही नहीं ।
जो नियम बाहरी स्वच्छता के लिए है, वही आंतरिक के लिए है ।
वीरता कोई एक ही मनुष्य का लक्षण नहीं है ।
आत्मा का दर्शन जितना होता है, उतना ही मनुष्य आगे बढता है ।
विचार लो (लौह) खंड की दीवार को भी भेदता है ।
सत्य के उपासक के लिए स्तुति और निन्दा एक ही होनी चाहिए ।
मूल को छोडकर जो डाल खोजता है, वह भटकता है ।
ईश्वर शक्ति ऐसी सत्ता है जिसके सामने कुछ भी टिक नहीं सकता ।
शुद्ध विचार की शक्ति वचन से बहुत अधिक है ।
जो जीवन सेवा में व्यतीत होता है वही फलदायी है ।
अगर सत्य किसी को बताना है, तो अटूट धैर्य चाहिए ।
सादगी बनाने से नहीं बनती, स्वभाव में होनी चाहिए ।
जो ईश्वर के सन्मुख है, वह बोलता नहीं, बोल सकता नहीं ।
मनुष्य की सच्ची पहचान उनके हार्दिक विनय से होती है ।
बहम और सत्य साथ नहीं चल सकते हैं ।
हम सत्संग ढूंढते हैं क्योंकि हमारी आत्मा के लिए वही खुराक है ।
दु:ख के समय जो भगवान के दर्शन करता है, उसे कोई भय नहीं लगता है ।
सब अपने समय पर वृद्ध होते है । एक तृष्णा हमेशा युवा ही रहती है ।
अशक्य दीखता है वह अशक्य है, ऐसा हमेशा नहीं है ।
जीवन की सफलता का सही निशान है कि मनुष्य कोमल और पीठ बनता जाता है।
गुरु सम्पूर्ण होना चाहिए । वह तो ईश्वर ही है ।
जब फिकर करने वाला ईश्वर है, तो हम क्या करें ।
कम खाने वाले का शरीर स्वस्थ रहता है, गम खाने वाले का मन स्वस्थ रहता है ।
जहां लेने की ईच्छा हो वहां मोह है । जहा देने की ईच्छा हो वहां प्रेम है ।
ज्ञानी शोक मृत्यु टालने का प्रयत्न नहीं करते मृत्यु सुधशरने का प्रयत्न करते है ।
अपने मन पर विजय पाना ही सबसे बडी विजय है ।
एक साथ ही लक्ष्मी और विवेक का वरदान प्राय: मनुष्यों को कम ही मिलता है ।
जीवन में केवल तीन सच्चे मित्र है - वृद्ध पत्नी, पुराना कुत्ता और वर्तमान धन ।

बालक का भाग्य सदैव उसकी माँ के द्वारा निर्मित होता है ।
धर्मात्मा को सत्य की नाव पार लगाती है ।
प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असंभव नजर आता है ।
कभी न टूटने वाला कवच है नम्रता ।
सबसे छोटा उत्तर है, करके दिखाना ।
सभी धर्म मानवता के लिये है, मानवता धर्म के लिये नही ।
वास्तविक आनन्द का स्त्रोत हमारे अन्त:करण में ही है ।
अग्नि स्वर्ण को परखती है आपत्ति वीर को ।
भविष्य को समजने के लिये अतीत का अध्ययन कीजिये ।
मनुष्य की परीक्षा उसके कार्यो से होती है, शब्दों से नहीं ।
प्रेम और अहिंसा से ही मानवता का विकास है ।
अच्छा आदमी कभी अकेला नहीं रहता ।
समय और सागर की लहर किसी की प्रतिक्षा नहीं करती ।
जिसमें दया नहीं उसमे कोई सद्‌गुण नहीं ।
जो मानव अपने अवगुण व दूसरों के गुण देखता है, वही महान है ।
चिंता एक कायरता है, वह जीवन को विषमय बना देती है ।
गरीब वह नहीं है, जिसके पास कम है, बल्कि वह है जो अधिक चाहता है ।
वह नर मृतक के समान है जिसके मन मे देशाभिमान नहीं है ।
आदर पाने के लिए मनुष्य को पहले विनम्र बनना पडता है ।
जहाँ नम्रता से काम निकल आए वहां उग्रता नही दिखानी चाहिये ।
संकट के समय धैर्य धारण करना मानो आधी लडाई जीत लेना है ।
यदी मनुष्य चाहे तो पुरुषार्थ के बलपर अपने दुर्भाग्य को भाग्य मे बदल सकता है ।
सत्यपरायण मनुष्य किसी से धृणा नही करता ।
संतोष सफलता की अंतिम सीडी है ।
जो अपने स्वार्थ के लिये दूसरों को क्षति पहुँचाये, वह दृष्ट है ।
वाणी का संयम ही सर्वश्रेष्ठ संयम है ।
शत्रु के गुण ग्रहण करो और गुरु के दुर्गुण छोड दो ।
क्रोध करने से पहले उसके परिणामों पर विचार करो ।
महापुरुष वही हैं, जिनके उद्देश्य महान होते है ।
कर्म वह दर्पण है, जिसमें हमारा प्रतिबिम्ब दिखता है ।
प्रसिद्ध होने की बजाय ईमानदार होना अधिक अधिक अच्छा है ।

ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है ।
अपनी भलाई करनेवाले की भलाई को भूल जाना कृतहनता है ।
वैराग्य के बिना ज्ञान नहीं ठहर सकता ।
फल मनुष्य के कर्म के अधीन है ।
धर्मात्मा को सत्य की नाव पार लगाती है ।
सदाचारी पुरुष ही शतायु होता है ।
अपने धर्ममें रहकर ही कल्याण सम्भव है ।
उपदेश देना सरल है, उपाय बताना कठिन है ।
बिना उत्साह के कभी किसी उच्च लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती ।
वस्तु का मुल्य तो सुयोग्य मनुष्य के पास रहने से ही बढता है ।
आत्म-सम्मान की रक्षा करना सबसे पहला धर्म है ।
मनुष्य जन्म में ही आत्मा का उद्धार हो सकता है ।
सारा विश्व परमेश्वर का ही स्वरुप है ।
दु:ख का मूल कारण आसक्ति है ।
महापुरुषों का संग दुर्लभ, अगम्य और अमोघ है ।
जो दयालु है, उन्ही पर भगवान की दया होगी ।
मनुष्य जीवन का परम और चरम उद्देश्य भगवत प्राप्ति है ।
वास्तव में बहा वह है जो उदारता में बडा है ।
स्वावलम्बी पुरुष स्वाभिमानी होता है ।
भारी से भारी आपत्ति को हर्ष के साथ सहो ।
ईश्वर ही सत्य है और सत्य ही ईश्वर है ।
जन्म तो उसीका सफल है, जो कुछ करके जाता है ।
जो कर्तव्य से बचता है, लाभ से बंछित रहता है ।
असफलता उसी के हाथ लगती है जो प्रयत्न नहीं करता ।
महान पुरुष कभी अपने को महान नहीं मानते ।
ईश्वर सत्य है, प्रकाश उसकी छायां है ।
सतत उद्योग करनेवाला अक्षय सुख प्राप्त करता है ।
मानव-सेवा ही मानव का प्रथम कर्तव्य है ।
उपकार करने की वृत्ति रखनेवाला संसार में दु:खी नहीं हो सकता ।
परिश्रम वो चाबी है जो किस्मत का दरवाजा खोल देती है ।
जीवन में निराशा से बडा कोई अभिशाप नहीं है ।

मनुष्य के साथ उसकी अच्छाई या बुराई ही साथ जाती है ।
पुरुषार्थ किये बिना भाग्य का निर्माण नहीं हो सकता ।
पवित्र हृदय से निकली हुई प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती ।
परोपकार के समान धर्म नहीं और परपीडा के समान अधर्म नहीं ।
जीवन में आशा तथा निराशा धूप छाँव के समान है ।
उदारता मानव के सब रोगों का ईलाज है ।
विवाह और मित्रता समान स्थितिवालों से करनी चाहिये ।
भूल करना पाप तो है ही, परन्तु उसे छिपाना उससे भी बडा पाप है ।
भाग्य को वही कोसते है जो कर्महीन होते है ।
एक गुण समस्त दोषो को ढक लेता है ।
घर वही है जहाँ प्रेम और सत्कार मिले ।
चेहरा हृदय का प्रतिबिम्ब है ।
तर्जुबा ज्ञान का जनक है और स्मरणशक्ति उसकी जननी ।
ज्ञान मानव जीवन का सार है ।
त्याग के समान कोई सुख नही है ।
पतझड हुये बिना पेडो पर फूल नहीं लगते ।
त्रुटि निकालना सरल है, अच्छा कार्य करना कठिन है ।
जो कार्य आज करना हो, उसे कल पर कदापि मत छोडो ।
जिसे सब तरह से संतोष है, वही धनवान है ।
हमारा ध्येय सत्य होना चाहिये न कि सुख ।
प्रतिष्ठा बनाने में कई वर्ष लग जाते हैं, कलंक एक क्षण में लग जाता है ।
हमारी बुद्धि ही हमारा गुण है ।
अगर हम भले हैं तो सारी दुनिया हमारे लिये भली है ।
आज का पुरुषार्थ ही कल का भाग्य है ।
भाग्य साहसी मनुष्य की सहाय करता है ।
सच्चे की भाषा सदा सरल होती है ।
ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है ।
कोई भी मनुष्य मानवता से बडा नहीं है ।
ज्ञान और कर्म से ही मोक्ष प्राप्त होता है ।
बार-बार यत्न करने से असम्भव भी सम्भव हो जाता है ।
ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते है ।

सुख का स्त्रोत हमारें हृदयों में है ।
गुण सब स्थानों पर अपना आदर करा लेता है ।
विवेकशील पुरुष दूसरें की लगतियों से अपनी गलती सुधारता है ।
गरीब वह है जिसका खर्च आमदानी से ज्यादा है ।
बडी बात को थोडे मे कहना ही चतुराई है ।
मनुष्य में शक्ति की कमी नहीं होती, संकल्प की कमी होती है ।
कल के भरोसे मत बैठों, मनुष्य का कल कौन जानता है ।
अपने लक्ष को भुलनेवाले बीच में ही अटक जाते है ।
अनजाने मे हुआ अपराध क्षमा योग्य होता है ।
त्याग के समान कोई सुख नहीं है ।
व्यंग और कटाक्ष के वचन नहीं बोलने चाहिये ।
मानसहित मरना अपमान सहित जीने से अच्छा है ।
माता के समान दूसरा कोई गुरु नहीं है ।
सन्तोष और सज्जनता ही शक्ति है ।
सबसे छोटा उत्तर है करके दिखाना ।
आज का पुरुषार्थ ही कल का भाग्य है ।
आत्मविश्वास सफलता का प्रमुख रहस्य है ।
जहाँ उत्तरदायित्व होता है, वहीं विकास होता है ।
प्रेम बिना तलवार के शासन करता है ।
अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है ।
दुसरों का सम्मान करो, लोग तुम्हारा भी सम्मान करेंगे ।
दुःखो का क्षय पुरुषार्थ से होता है ।
पत्नी घर की आत्मा या प्राण है ।
सारा आनंद देने में है, चाहने या मांगने में नहीं ।
संसार दुःखदायी नहीं, संसार की आसक्ति दुःखदायी है ।
प्रयत्नशील मनुष्यों के लिए सदा आशा है ।
सिद्धि बात से नहीं, क्रिया से मिलती है ।
वैराग्य के बिना ज्ञान नहीं ठहर सकता ।
(३३९) भगवत्साक्षातकार करने का नाम ही विद्वान है ।
लोभ या भय से सत्य एवं धर्म का त्याग न करे ।
मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं ही विधाता है ।

મા એટલે વ્હાલ ભરેલ વીરડો, મા એટલે મંદિર કેરો દીવડો
ભગવાનને ભજવાથી મા મળતી નથી, પણ મા ને ભજવાથી ભગવાન મળે છે
રેતીના કણને કદાચ ગણી શકાય, પણ માની મમતાને ન ગણી શકાય
જગતરૂપી ખારા સમુદ્રમાં મા એ મીઠી વીરડી સમાન છે
મા એ મા, બાકી બધા વગડાના વા !
મા અને ક્ષમા બન્ને એક જ છે કેમ કે માફી આપવામાં બન્ને નેક છે
કારગીલમાંથી પાકને ખદેડવું સહેલું છે... પણ દીલમાંથી પાપને ખસેડવું મુશ્કેલ
સાપ અને પાપ બંને સુંવાળા હોય છે, સાથે ખતરનાક હોય છે
દુર્જનની દોસ્તી અને દુશ્મની બન્નેવથી દૂર રહો, બન્નેવ ખતરનાક છે
ચંદ્રના કલંકને જ જોનારો, પૂનમની મજા ગુમાવે છે
પ્રશંસા હંમેશા પચવામાં ભારે હોય છે
આળસની પાડોશમાં, બરબાદીનો વાસ છે
ચિતા અને ચિંતા, બેય ખતરનાક છે, એક દેહ બાળે, બીજી દિલ બાળે
નયન ભલે પ્રભુએ આપ્યા પણ નિર્વિકાર તો તારે જ રાખવા પડશે
ગુણાનુવાદ સાંભળવા શોકસભાનું આયોજન જરૂરી છે
મહેનત.... એ મંત્ર છે.... પ્રત્યેક સફળતાનો
તમામ દુ:ખોની, રોગોની, પાપોની જન્મભૂમિ એક જ છે, જેનું નામ આળસ
મકાન લેતા પહેલા પાડોશી તપાસી લેજો અને સફર કરતાં પહેલા સાથી ચકાસી લેજો
તમારી પાસે કોકની નિંદા કરનારો, કોકની પાસે તમારી નિંદા કરનારો હશે
રેશમી કપડા પહેરવાથી સ્વભાવ રેશમી નથી બનતો
અન્યની સામે એક આંગળી તાકતા જરાક ગણજો ત્રણ આંગળી તમારી સામે છે
કાર્ય એ તો કામધેનુ છે, જો દોહતા આવડે તો દૂધ મળે, ન આવડે તો લાત મળે
મનમાં પ્રભુની સ્થાપના, જીવનમાં પાપની ઉત્થાપના
દિલ અને દર્પણ જેટલા ચોક્ખા... પ્રતિબિંબ એટલું ચોક્ખું
હૃદયકમલથી શ્રેષ્ઠ કોઈ ફુલ નથી પ્રભુને અર્પણ કરવા માટે
પ્રત્યેક હાર અહંકારને આભારી હોય છે
બીજુ બધુ પાછું મેળવી શકાય છે, ગયેલુ ચારિત્ર અને ગયેલા સમય સિવાય
આફત એ આર્શીવાદ છે, જેમાં તમે... તમારાને, પારકાને સાચેસાચ ઓળખી શકો છો
દીકરાને મા ના આર્શીવાદ તો મળેજ, પણ આજ્ઞાંકિત દીકરાને કાયમ ફળે
મા-બાપ વગરનું ઘર એટલે..... ધબકારા વિનાનું હૃદય
મા-બાપની આંખમાં બે વાર આંસુ આવે, દીકરી સાસરે જાય ત્યારે.. દીકરો મોં ફેરવે ત્યારે
મા વગરનું બાળક એટલે કડી વગરનો દરવાજો
સંસારની બે કરૂણતા - મા વિનાનું ઘર અને ઘર વિનાની મા
ત્રણ જગતનો નાથ પણ મા વિના અનાથ છે
માતાનો ખોળો એટલે.... દુનિયાની સહુથી સલામત જત્ત્યા
મા એક એવી ઋતુ છે, જેને કદિ પાનખર આવતી નથી
સો શિક્ષક કરતાં એક માતા ચડે... સદ્‌ગુણ - સંસ્કાર આપી બાળકને ઘડે
મિચ્છામી દુક્કડમ્ - કાર્ડથી નહિ હાર્ટથી કરો....
જ્ઞાન ચડવું (યાદ રહેવું) આસાન છે, જ્ઞાન ઉતરવું (અંતરમાં) કઠિન છે
ધર્મથી શું મળે ? એમ નહિ... ધર્મથી શું ટળે ? એ પૂછો...

ક્રોધથી તમે કોઈને દબાવી શકો છો... તમારા બનાવી નથી શકતા
સાધનાનું શિખર સમભાવ, સમભાવનું શિખર સાક્ષીભાવ અને સાક્ષીભાવનું શિખર સ્વભાવ
જાત માટે થાય તે દર્શન, જગત માટે થાય તે પ્રદર્શન
ખરાબ કામ કરવાની ઈચ્છા થાય તો તે કરતા પહેલા સારા માણસની સલાહ લેજો
આંખ અશ્રુ સારે ત્યારે દુઃખ ધોવાય, હૃદય અશ્રુ સારે ત્યારે પાપ ધોવાય
ગરમ પાણીથી હાથ દાઝે છે... ગરમ વાણીથી તો હૈયું દાઝે છે...
અફવાને પાંખ હોય છે... સત્યને આંખ હોય છે
ખાવું એ પ્રકૃતિ છે, ઝૂંટવી ખાવું એ વિકૃતિ છે અને.. ખવડાવવું તે સંસ્કૃતિ છે
કચવાતા કરીએ તે કામ, ને હરખાતા કરીએ તે ભક્તિ
કટાસણું શુદ્ધ, કપડા શુદ્ધ, સૂત્ર શુદ્ધ.. પણ મન અશુદ્ધ... તો.. સંવત્સરી અશુદ્ધ
અધિકાર છોડવો સહેલો છે, અહંકાર છોડવો કઠિન છે
જે તમને નથી ગમતું તે, બીજાનેય નથી ગમતું... થોડુંક વિચારજો...
જિંદગીમાં જતું કરનારો જીતી જાય છે
કામી અધીર હોય છે, ને... ક્રોધી બધીર હોય છે...
જે મુક્યા પછી શ્વાસ હેઠો બેસે... તેનું નામ વિશ્વાસ
નિંદા અને નિદ્રા બે ઉપર વિજય મેળવી શકે તે મહાપુરુષ બની શકે
આવે ત્યારે નાની ને, જાય ત્યારે મોટી લાગે તેનું નામ તક
જીપમાં બ્રેક જોઈએ અને જીભમાં વિવેક જોઈએ
વ્યવહાર એ વિચારનું પ્રતિબિંબ છે
અગ્નિમાં સોનું પરખાય છે, મંદીમાં... મિત્રતા પરખાય છે
પોસમોર્ટમ નહિ... પ્લાનીંગ કરો
પૈસો.... વાવી શકાય છે, વાપરી શકાય છે, ને વેડફી શકાય છે
વાણી વ્યક્તિનું પ્રમાણપત્ર છે
સુખી થવાનો રસ્તો... આવકનો વધારો નહિ... જરૂરતનો ઘટાડો છે
પકડો, મત જાને દો - સંસારી શિખવે અને પકડો મત, જાને દો - ગુરૂ શિખવે
ગુરૂ ધારતા પહેલા લાખવાર વિચારવું, ગુરૂ ધાર્યા પછી એકેયવાર ન વિચારવું
લેટ્સ ગો - નામનો મંત્ર - એ શાંતિને આમંત્રણ આપે છે
ખાવું કરતા ખવડાવવું જેને વધુ ગમે તેનું માનવજીવન સફળ
જીવનનો ફ્યુસ ઉડે તે પહેલા સાચો યુઝ કરી લેજો
સુધરવાની શરૂઆત કરે તે સાધક, જેનું સુધરવાનું સંપૂર્ણ તે સિદ્ધ
ઝંખેલું બધુ જડતું નથી, જે જડે તે બધું ઝંખેલું હોતું નથી
આફતનો લાગતો પહાડ બરફનો બનેલો હોય છે
જીવનમાં ઉપયોગી અનેક હોય છે, ઉપકારી ગુરૂદેવ તો એક જ હોય છે
જે ગુરૂને સાંભળે, જે ગુરૂને સંભારે... તેને ગુરૂ સભાળે છે
આફતના વાદળા ઘેરાય ત્યારે સમજવું કે સુખનો વરસાદ વરસવાનો છે
શરીર ટકે છે શ્વાસથી, સંબંધ ટકે છે વિશ્વાસથી, સંબંધનો શ્વાસ વિશ્વાસ છે
સાચી શાંતિ મેળવવા મકાનને નહિ મનને એરકન્ડિશન્ડ બનાવવાની જરૂર છે
આજના માનવીએ મકાનની ઉંચાઈ ખૂબ વધારી, પણ મનની ઊંચાઈ ઘટાડી નાખી
ભૌતિક ક્ષેત્રે પાયાનું પરિબળ સંપતિ છે, જ્યારે આત્મિક ક્ષેત્રે પાયાનું પરિબળ શ્રદ્ધા છે
સ્નેહ સેતુ સર્જે છે... જ્યારે અહંકાર દિવાલ સર્જે છે

ભગવાનની.... મૂર્તિ આંખને ઠારે, વાણી હૈયાને ઠારે અને સ્મરણ મનને ઠારે
પ્રાર્થના એટલે પરમાત્મા સાથે વાત કરવાનો વાયરલેસ વ્યવહાર
નિયમ વિનાનું જીવન એટલે વાડ વિનાનું ખેતર
યુવાની સ્વેચ્છાચારથી નહિ.... સ્વચ્છાચારથી શોભે છે
શરીર કવર છે અને આત્મા કાગળ છે... કિંમત કવરની નહીં પણ કાગળની હોય છે
માનવી પાપ કરતા નથી ડરતો, પણ કરેલાં પાપ જાહેર કરતાં ડરે છે
વાણી ભાડે મળે... વર્તન ભાડે ન મળે
હૃદય પરિવર્તન વિના સાચો ધર્મ ક્યારેય કરાવી શકાતો નથી
સારા વિચારો, સારા વચનો અને સારા કાર્યોથી તમારું મન શુદ્ધ કરો
સદાચાર વિનાના માનવી એટલે સેલ વિનાની બેટરી
જાતને બદલી નાંખો.... જગત બદલાઈ જશે
મકાનની છત કાચી તો પાણી ઘૂસી જાય, કાનની છત કાચી તો કુવિચાર ઘૂસી જાય
પ્રેમ સહુ પર રાખો, વિશ્વાસ થોડાં ઉપર રાખો પણ દ્વેષ તો કોઈ પર પણ ન રાખો
સહવાસ એવો હોવો ઘટે કે જેમાં સ્વભાવની સુવાસ શાશ્વત રહે
ભાવ પોતાને જ તારે... જ્યારે (સારો) સ્વભાવ તો બીજાને ય તારે....
જેમ વાળ ધોળાં થતાં જાય તેમ હૈયું પણ ધોળું થવું જોઈએ
ન ભાવે એને ય જે નભાવે તે જ સાચો સમજદાર છે
સંપ ત્યા જંપ.... નહિ તો ધરતીકંપ
મહત્તા યોગ્યતાથી જ મળે છે, માંગવાથી કદી નહિ
ગરીબાઈ થોડું માગે છે, વૈભવ-વિલાસ ઘણું માંગે છે, જ્યારે લોભ બધું જ માંગે છે
સત્ય અને માખણ, બંને અંતે તો સપાટી પર આવવાનો જ સ્વભાવ ધરાવે છે
નાસ્તિકને મન ઈશ્વર શૂન્ય છે, જ્યારે આસ્તિકને મન એ પૂર્ણવિરામ છે
જીવન શુધ્ધિ વિના જીવન સિધ્ધિ નથી
માનવીનું સાચું સ્વરૂપ અરીસામાં નહિ, કિંતુ તેના આચરણમાં દેખાય છે
રાંધેલુ ધાન અને માનવનું મન - એ બે ક્યારે બગડે તે કહેવાય નહિ
આંખ કરે તે દર્શન અને હૃદય કરે તે સાક્ષાત્કાર
પગ ચાલે તે પ્રવાસ અને હૃદય ચાલે તે યાત્રા
કર્મનો ઉદય કલંકરૂપ નથી, પણ કર્મનો બંધ કલંકરૂપ છે
વેદનાને પંપાળ્યા કરવી એ માંદા મનની નિશાની છે
જેનામાં નમ્રતા અને નિખાલસતા હોય છે એ જ સાચી પ્રગતિ કરી શકે છે
વજનનો અનુભવ ન કરાવે તેનું નામ સ્વજન
સુવિચારોનું નિરંતર ચિંતન ચારિત્રનું ઘડતર કરે છે
ગઈકાલે બનેલી ચિંતાજનક ઘટના જે ભુલી જાય તેની યાદશક્તિ ઉત્તમ કહેવાય
દીર્ઘાયુ સૌને બનવું છે પરંતુ ઘડપણ કોઈને ગમતું નથી
મકાન હાથ વડે બંધાય છે પરંતુ ઘર હૃદય વડે બંધાય છે
અજ્ઞાનનો સ્વીકાર એ જ્ઞાનનું પ્રથમ પગથીયું છે
ભગવાન કરતા મંદિર મહત્વનું બને ત્યારે ધર્મને ઓક્સિજન પર જીવવું પડે છે
આજના યુગમાં ઘરમાં સોફાસેટ, ટી.વી.સેટ છે, જ્યારે ઘરમાં રહેવાવાળા અપસેટ છે
ભયથી બાળકો તાબામાં રહે છે, પણ પ્રેમથી તે વશ થઈ જાય છે
માતાનો ખોળો તો પ્રેમની યુનીવર્સિટી છે

હૃદયને લાગણીનો પરસેવો વળે છે, ત્યારે આંસુ રૂપે બહાર આવે છે
ભૂતકાળને છાતી સાથે ભીંસી રાખવાથી આજનો આનંદ માણી શકશું નહિ
લગ્નજીવનમાં રથના ચાર પૈડા છે - પ્રેમ, વિશ્વાસ, સમજણ અને સમર્પણ
ભાષા ગમે તે વાપરો, પરંતુ તમે જેવા હશો એવા જ તમારા શબ્દો હશે
નમસ્કાર એ પરગુણદર્શન અને સ્વદોષદર્શનની અદ્‌ભૂત પ્રક્રિયા છે
આળસ એ આરામ નથી, કંજુસાઈ એ કરકસર નથી અને ઉડાઉપણું એ ઉદારતા નથી
સત્ય બોલું એ સારા અક્ષર લખવા જેવું છે અને તે ફક્ત ટેવ પાડવાથી જ શક્ય બને છે
મીઠું, આથો અને ઉતાવળ ઓછા સારા
મરેલાને બાળે એ ચિતા, જીવતાને બાળે તે ચિંતા
સફળતાના બંદરે પહોંચવા માટે પ્રમાણિકતાનો ટેક્સ ચૂકવવો પડતો હોય છે
તર્ક ત્યાં તકરાર... ને શ્રધ્ધા ત્યાં એકરાર
ક્રોધના ધોધમાંથી જ વિરોધની વિજળી પેદા થાય છે
જે બોલતા શરમાઓ છો, તે વિચારતાં પણ શરમાજો
ક્રોધની સામે ક્રોધ કરવો એટલે ગાંડાની સામે ગાંડા થવું
વિચારપૂર્વકનું વર્તન એ પ્રગતિના પંથનું પ્રથમ પગલું છે
જિનમંદિર એટલે સમ્યગ્દર્શનની ડીગ્રી મેળવવાની યુનિવર્સિટી
જો વાસના એ વિષ છે.... તો ઉપાસના એ અમૃત છે
પાણી અને વાણી..... બંનેને ગાળીને વાપરો
સૌથી વધુ વિશ્રામ આપવા જેવી ચીજ કોઈ હોય તો તે છે જીભ
વાસનાને વાળે તેનું નામ ઉપાસના
સામી વ્યક્તિનું મન કાંઈ પ્રવાહી નથી કે તમારી પસંદગીના બીબામાં ઢળી શકે
સહવાસ એવો હોવો ઘટે કે જેમાં સ્વભાવની સુવાસ શાશ્વત રહે
સ્વાર્થની દિવાલોને બદલે સ્નેહના સેતુ સર્જાય ત્યારે જ દુઃખ ટળશે
શબ્દોની છીપમાં મોતી પાકે છે તેને મંત્ર કહેવાય છે
નહિ બોલાયેલા શબ્દ તમારા ગુલામ છે, બોલાયેલા શબ્દના તમે ગુલામ છો
માણસનું પ્રતિબિંબ જેવું એની વાણીમાં પડે, તેવું તો અરીસામાં ય નથી પડતું
સંબંધોમાં જ્યારથી અધિકારની વાત આવશે ત્યારથી ધિક્કાર શરૂ થઈ જશે

આજનો માનવી પોતાની ઉભી કરેલી સગવડોનોજ ગુલામ બન્યો છે
સેવા, સમર્પણ અને સંગઠન સમાજમાં સાચી વૈચારિક ક્રાંતિ લાવી શકે છે
પહેલા માણસને ટેવ પડે છે, પછી ટેવ માણસને પાડે છે
રાગના ત્યાગ વિના અંતરની આગ ન ઓલવાય
વખત તને શાણો બનાવે તે કરતાં વખતસર તું જ શાણો થઈ જા
નિષ્ફળતાના ભયથી જે ડરતો નથી તેને સફળતા સામેથી મળે છે
જો તમે કાંઈ ન આપી શકતા હો તો સૌ પ્રત્યે અંતઃકરણપૂર્વક સહાનુભૂતિ જરૂર દર્શાવો
આપણને કોઈ જગ્યાએ જંપીને બેસવા જ ન દે એનું નામ સંસાર
જગતના સુખોની ઈચ્છા પણ જેને પાપનો ઉદય હોય તેને જ થાય છે
શક્તિ અનુસાર વ્યવહાર કરનાર સદા સુખી નીવડે છે
કાંટાઓનો ખ્યાલ રાખશું તો ફુલને કદી માણી શકશું નહિ
બોલતા પહેલા વિચારો અને કુદતા પહેલાં જુઓ
નસીબ અને પુરૂષાર્થ કરતા કર્મજ બળવાન છે
ઉત્સાહ વગરનો મનુષ્ય માત્ર એક પૂતળા સમાન છે
ભજન અને ભોજનમાં માનવે નિયમિત રહેવું જોઈએ
જે કરશે તે પામશે - કર્તવ્ય કર્યા વગર માનવી કંઈ પામતો નથી
આપણો વ્યવહાર અને આપણું વર્તન એ આપણા સંસ્કારોનું ઓળખપત્ર છે
ટાયરમાં હવા ન હોય તો મોટર ચાલે નહિ એમ હૃદયમાં પ્રેમ ન હોય તો જીવન જામે નહિ
પ્રત્યેક દિન, પળ એક તક છે, ખોશો નહિ, સતત પ્રયત્નશીલ રહો અને ધ્યેય તરફ આગળ વધો
ઓછું બોલો, વિનયપૂર્વક બોલો, નમ્રતાથી બોલો, મધુરતા અને પ્રેમથી બોલો
જ્યાં હશે પ્રેમ ત્યાં બધુ માફ - જ્યાં હશે વ્હેમ ત્યાં બધું સાફ
જેઓ બહાના બતાવવામાં હોશિયાર હોય છે તેઓ બીજા કશામાં હોશિયાર હોતા નથી
નિષ્ક્રિય ઉંડા જ્ઞાન કરતાં સક્રિય સાદી સમજ વધું મનોહર છે
જેઓ આપીને ભૂલી જાય છે અને લઈને આપવાનું યાદ રાખે છે તે નિરાભીમાની હોય છે
પ્રશંસા સાંભળીને નહિ પણ નિંદા સાંભળીને નમ્ર રહી શકે તે જ ખરો માનવ
સંયમ, સંસ્કાર અને સદાચાર એ ત્રણેય વસ્તુ સિવાય મનુષ્યનો કદી પણ ઉદય થતો નથી
ધર્મ લક્ષ્મીને નચાવે છે, જ્યારે અધર્મીને લક્ષ્મી નચાવે છે
ઈન્દ્રિયોના વિષયો પર કાબૂ મેળવો એટલે મોક્ષ તમારી હથેલીમાં છે
ભલા બનો, ભલુ કરો, સહનશીલ બનો, સર્વ પ્રત્યે સદ્‌ભાવ રાખો
કસોટીમાંથી પાર થયા વિના માણસ પૂર્ણ બનતો નથી
દાન ધર્મની પૂર્ણતા છે અને ધર્મનો શૃંગાર છે
પ્રેમ કરવો તે કલા છે પણ તેને નિભાવવો તે સાધના છે
જેની કીર્તિ વધે તેના શત્રુ પણ વધે છે
વાતોના ભાષણો કરનાર કરતાં આચરણમાં મૂકનાર વધુ સારો છે
જ્યારે પૈસાની જબાન ખૂલે છે ત્યારે સત્ય મુંગુ રહે છે
સમાજમાં સારા દેખાવા કરતાં સારા બનવા પ્રયત્ન કરો
જાત પર વિજય મેળવનાર પરાજય પામતો નથી
અનુભવની શાખા પુસ્તક કરતાં વધુ જ્ઞાન આપે છે
આજનો માનવી પોતાની ઉભી કરેલી સગવડોનો જ ગુલામ બન્યો છે
જગતમાં માન ન હોત તો અહીં જ મોક્ષ હોત !

પરમાત્માને ધ્યાવવાથી પરમાત્મા થવાય છે
દુ:ખનું કારણ માત્ર વિષમતા છે, અને તે જો સમે છે તો સર્વ સુખ જ છે
કર્મથી, ભ્રાંતિથી અથવા માયાથી છૂટવું તે મોક્ષ છે, એ મોક્ષની શબ્દ વ્યાખ્યા છે
સ્વાદનો ત્યાગ એ આહારનો ખરો ત્યાગ એમ જ્ઞાનીઓ કહે છે
માતા-પિતા અને સંતની આશિષ એ સન્મતિ અને સંપત્તિ બન્ને આપે છે
સત્સંગ એ આત્માનું પરમ હિતૈષર ઔષધ છે
જે છૂટવા માટે જીવે છે તે બંધનમાં આવતો નથી
માનવજીવન બુદ્ધિને બદલે ભાગ્યથી વધારે ચાલે છે
જ્યારે તમને ગુસ્સો આવે ત્યારે તમે કોઈ વ્યક્તિને ઉત્તર ન આપો, એ જ સર્વોત્તમ છે
જેવું થવાનું હોય છે તેવી જ બુદ્ધિ, તેવા જ ઉપાય અને તેવી જ સહાય મળે છે
દુર્જનની સોબતથી સદાચાર નાશ પામે છે
આપણી ભૂલોને જ યાદ કરો જેથી બીજાની ભૂલો ભૂલી જવાય
એક નાનકડું સ્મિત શું શું કરી શકે એ વિશે બે ઘડી થોભીને વિચાર કદી કર્યો છે ખરો ?
સારા વિચારો, સારા વચનો અને સારા કાર્યોથી તમારું મન શુદ્ધ કરો
હે જીવ ! એ ક્લેશરૂપી સંસારથી નિવૃત્ત થા, નિવૃત્ત થા....
પુણ્ય, પાપ અને આયુષ્ય એ કોઈ બીજાને ન આપી શકે, તે દરેક પોતે જ ભોગવે છે
જ્ઞાન તેનું નામ કે જે હર્ષ, શોક વખતે હાજર થાય; અર્થાત્ હર્ષ, શોક થાય નહીં
સમજીને અલ્પભાષી થનારને પ્રશ્ચાતાપ કરવાનો થોડો જ અવસર સંભવે છે
જીવ મારાપણું માને છે તે જ દુ:ખ છે, કેમકે મારાપણું માન્યું કે ચિંતા થઈ કે કેમ થશે ?
દરેક પ્રસંગે મારાપણું થતું અટકાવવું; તો ચિંતા, કલ્પના પાતળી પડશે
તૃષ્ણાવાળો નર નિત્ય ભિખારી; સંતોષવાળો જીવ સદા સુખી
મોહન અજ્ઞાનપણાનો છે, બાકી જગતમાં કશુંજ મારૂં નથી
જગતનો કોઈપણ પદાર્થ, સગાં, કુટુંબી, મિત્રનો કંઈ હર્ષ-શોક કરવો યોગ્ય જ નથી
આ લક્ષ્મી ક્ષણભંગુર છે, એ તો પૂર્વજન્મમાં પુણ્ય કરેલ હોય તેની દાસી છે
વૈરાગ્ય એ જ અનંત સુખમાં લઈ જનાર ઉત્કૃષ્ટ ભોમિયો છે
મનને વશ કર્યું તેણે જગતને વશ કર્યું
મહાપુરૂષોના આચરણ જોવા કરતાં તેનું અંતઃકરણ જોવું એ વધારે પરીક્ષા છે
જિંદગી ટુંકી, જંજાળ લાંબી છે, માટે જંજાળ ટૂંકી કર તો સુખરૂપે જિંદગી લાંબી લાગશે
ક્ષમા એજ મોક્ષનો ભવ્ય દરવાજો છે
શાંત સ્વભાવ એ જ સજ્જનતાનું ખરૂં મૂળ છે
દિવસની ભૂલ માટે રાત્રે હસજે, પરંતુ તેવું હસવું ફરી ન થાય તે લક્ષિત રાખજે
જે મનુષ્ય સત્પુરૂષોનાં ચરિત્ર રહસ્યને પામે છે તે મનુષ્ય પરમેશ્વર થાય છે
ચંચળ ચિત્ત - એ જ સર્વ વિષમ દુ:ખનું મૂળિયું છે
પઠન કરવા કરતાં મનન કરવા ભણી વધું લક્ષ આપજો
વર્તનમાં બાળક થાઓ, સત્યમાં યુવાન થાઓ, જ્ઞાનમાં વૃદ્ધ થાઓ
માત્ર સલાહ આપી મુરબ્બી ન બનશો, પણ સહાયરૂપી બની સાથીદાર જરૂર બનજો
મનુષ્યનો મોટામાં મોટો દોષ એ પોતાને નિર્દોષ સમજે છે એ છે
જ્યારે કોઈપણ મૂંઝવણનો ઉકેલ ન જડે ત્યારે એકાંતનો આશરો લઈ પ્રભુને પ્રાર્થના કરો
પાડોશીની સો ભૂલ સુધારવા કરતાં પોતાની એક જ ભૂલ સુધારવી એ વધારે શ્રેષ્ઠ છે
સાચું બોલવાનું શક્ય જ ન હોય તો મૌનનું પાલન કરજો, પરંતુ જૂઠું તો ન જ બોલશો

ઘરમાં પાપનો એક પૈસો પણ પેસી જશે તો, પુણ્યના બધા જ પૈસાને ખેંચી જશે
જેવું હશે તેવું ચાલશે, ભાવશે, ફાવશે, ગમશે - તેવા માણસો દુ:ખી થાય નહિ
આપત્તિની ફૂટપટ્ટી વડે મિત્રોની વફાદારી અને સંબંધીઓનો સહકાર મપાય છે
જીવનમાં સાદાઈ, સંતોષ અને સંયમ હશે તો જ શાંતિનો અનુભવ થશે
જીવનના ચોપડાનું સરવૈયું રોજ તપાસતાં રહેજો, નહીં તો ખોટ જશે
જેણે સુખ મોકલ્યું છે એણે જ દુ:ખને મોકલ્યું છે; માટે બંનેનું પ્રેમથી સ્વાગત કરો
ધર્મ વિનાનો ધનવાન એ જ સાચો કંગાળ છે, અને ધર્મી દરિદ્રી હોવા છતાં સાચો શ્રીમંત છે
દુનિયાનો શહેનશાહ પણ સાચા સાધુની આત્મીક દ્રષ્ટિએ પરમ કંગાળ છે
સઘળી કાર્યવાહીને જમીનદોસ્ત કરનાર કોઈ હોય તો તે માત્ર ભય છે
હંમેશા સુખના ભાગાકાર અને દુ:ખના ગુણાકાર થાય છે
વખત તને શાણો બનાવે તે કરતાં વખતસર તું જ શાણો થઈ જા
સાચું બોલવાનો પહેલો લાભ તો એ છે કે... શું બોલ્યા હતા ! તે યાદ કરવું પડતું નથી
દુનિયામાં આત્મપ્રશંસા જેવું કોઈ ઝેર નથી, આત્મનિંદા જેવું કોઈ અમૃત નથી
પેટ અને પેટી ખૂબ ભરાય છે ત્યારે આળસ અને અરિ ઉભાં થાય છે
તમારા કાન બધાને આપો પણ જીભ કો,ને આપો નહિ
ખાઈમાં પડેલો બચી શકે છે પણ અદેખાઈમાં પડેલો ના બચી શકે
તકની મોટી મુશ્કેલી એ છે કે એ આવે તેના કરતા તે જતી રહે ત્યારે તે મોટી લાગે છે
મોહની એસ.ટી.ડી જેની ચાલુ હોય તેને પરમાત્માની આઈ.એસ.ડી. લાગતી નથી
નાનાને નિર્બળ ગણી, નાખી નવ દેવાય; લઘુ કાંટે ઘડિયાળમાં, જુઓ વખત વર્તાય
સૂર્ય, ચંદ્ર આકાશે ચમકે, પૃથ્વી પર તો દાની, પરને માટે જીવી જાણે, એના જીવન મંગલકારી
સાચુ કહેવામાં જેટલી હિંમત જોઈએ, તેના કરતા સાચું સ્વીકારવામાં વધુ હિંમત જોઈએ
ક્રોધ એક પ્રકારનું તોફાન છે, એ જ્યારે આવે છે ત્યારે વિવેક નષ્ટ કરે છે
હૃદયને પવિત્ર, ઉન્નત અને દૈવી બનાવવાનો એક માત્ર ઉપાય તે તેજસ્વી ભાવના છે
દુન્વયી ચીજોમાં સુખ શોધવું નકામું છે, ખુશીનો ખજાનો તો તમારી અંદર જ પડેલો છે
બે વસ્તુ વિના ચાલે નહિ - મમતા અને માનવતા
આપણી અંદર ઈશ્વરની ઉપસ્થિતિ એ જ વિશ્વાસ છે
સત્યનું રૂપ જ એવું છે કે તેની છબિ જોતાં જ તે મનને હરી લે છે
જેણે મનને જીત્યું છે તેણે જગતને પણ જીત્યું છે
સૂરજના વિયોગમાં જો આસું સારશો, તો તમે તારાઓનું દર્શન પણ ગુમાવશો
ધર્માત્મા, જરૂર પડે તો પૈસા માટે યત્ન કરે પણ પૈસા માટે અનીતિ તો ક્યારેય ન કરે
મિથ્યાત્વ હંમેશા બીજાની સામે જોવાની પ્રેરણા કરે છે અને સમ્યક્ત્વ પોતાની સામે
મનને, ઈંદ્રિયોને, કષાયોને નિયંત્રણમાં રાખે તેનું નામ નિયમ
બીજાના દોષ જોવાની કુટેવવાળાને સમ્યગ્દર્શન મળે નહિ અને મળ્યું હોય તો ટકે નહિ
ઈંદ્રિયોની ગુલામીના કારણે ભોગની ઈચ્છા થાય છે
કેટલાક આસક્તિ અને કેટલાક અશક્તિથી સંસારમાં રહ્યાં હોય છે
સમ્યગ્દર્શન એ જહાજનું તળિયું છે, તેમાં કાણું ન ચાલે
હૃદય પરિવર્તન વિના સાચો ધર્મ ક્યારેય કરાવી શકાતો નથી

દુ:ખને હસતાં જે વેઠે તે જ સમ્યગ્દર્શન પામે અને નિર્મળ બનાવી શકે
સમ્યગ્દર્શન પામવા માટે તો સાગર જેવા ગંભીર બનવું પડશે

કાર્ય થોડું કે વધારે તેનું મુલ્ય નથી પણ આજ્ઞા અને વિધિપૂર્વકનું હોય તેનું મૂલ્ય છે
પાપનો ભય પેદા થયા વિના નિયમો લેવાની ઈચ્છા જ થતી નથી
પ્રમાણિકતા રૂપી પાયા ઉપર માનવતાની ઈમારત ટકે છે
તમામ પરિસ્થિતિમાં રહેજો, ઈશ્વરની ઈચ્છા તે જ મારી ઈચ્છા
સ્વાશ્રય અને સંયમ એ ચારિત્રના ફેફસા છે
પારકી નિંદા ન કરશો, સમયનો દુરુપયોગ ન કરશો
જીવનના દુઃખોને પણ ઈશ્વરની પ્રસાદી માની સ્વીકારી લો
ઘરડાની મશ્કરી ન કરશો, નઠારાની સોબત ન કરશો
સ્મિત એ મનુષ્યની મહામુલી મિરાત છે
બે વાત ભૂલી જાઓ - પોતે કરેલો ઉપકાર અને બીજાએ કરેલા અપકાર
જેનામાં સહન કરવાની તૈયારી નથી તે ક્યારે પણ ધર્મ કરી શકતો જ નથી
સંઘનું અસ્તિત્વ છે ત્યાં સુધી જ શાસનનું અસ્તિત્વ રહી શકે તેમ છે
મૌનના વૃક્ષ પર શાંતિનું ફળ લાગે છે
આવતી ચીજ માટે હરખ ન કરો, જતી ચીજ માટે આંસુ ન સારો
હિંમત હારી જાઓ ત્યારે ધર્મગ્રંથનું વાંચન કરો
આપણે વિશ્વાસના આધારે ચાલીએ છીએ, સૃષ્ટીના આધારે નહિ